प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में अभिलेखों की मूल्यवत्ता

डॉ. आर. पी. सिंह
सहायक प्राध्यापक - प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

इतिहास जानने अथवा लेखन के सम्बन्ध में अभिलेखों का अप्रतिम महत्व है। ये अतीत के ऐसे अमिट स्रोत हैं जिनके प्रक्षिप्त होने की सम्भावना अत्यल्प रहती है। पाश्चात्य विचारकों ने भारतीयों में इतिहासबोध के अभाव का उल्लेख किया है। निश्चित ही प्राचीन भारतीय चिन्तक आधुनिक इतिहास की अवधारणा से भिन्न मत रखते थे। किसी घटना को केवल तिथि या संवत् में उल्लेख न करके उसे पूरे परिप्रेक्ष्य में देखते थे। यह भारतीय चिंतन शैली की समग्र सोच की अभिव्यक्ति है। विशाल भारतीय साहित्य में जिन ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है, उसे इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। दूसरी बात, भारतीय जलवायु के कारण भी ऐतिहासिक घटनाओं के विवरण काल के गाल में समा गये। पत्तों, चमडों एवं कागजों पर लिखे हुए लेख प्रायः नष्ट हो गये, परन्तु पत्थरों, धातुओं एवं मृणपात्रों पर उत्कीर्ण लेख कालजयी सिद्ध हुए, परन्तु पत्थरों में तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व के मौर्यवंशी सम्राट अशोक की चिन्ताओं को समझा जा सकता है। अशोक ने सप्तम अभिलेख में अपने पूर्व के नरेशों द्वारा किए गये सुकृत्यों का उल्लेख किया है, परन्तु उनके कृत्यों का विवरण नष्ट हो गया- इसीलिए इस प्रियदर्शी सम्राट ने अपने प्रजाहित कार्यों को पत्थरों पर उत्कीर्ण कराने का साहस दिखाया जिससे वे चिरस्थायी हो सकें।[1]

ऐतिहासिक सूचना के मूल स्रोत अभिलेखों के अनुशीलन से राजनीतिक घटनाओं की यथार्थ जानकारी प्राप्त होती है। कुछ अभिलेख ऐतिहासिक घटनाओं के मूल स्रोत के रूप में स्थापित हैं खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख, समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, यशोधर्मा का मन्दसौर अभिलेख, रामगुप्त का विदिशा लेख एवं दक्षिण भारत के गंग एवं कदम्ब राजवंश के अभिलेख इसी श्रेणी में आते हैं। हाथी गुम्फा अभिलेख जैन तीर्थंकरों एवं सिद्धों की प्रार्थना से प्रारम्भ होता है[2] (नमो अरहतानं, नमो सव सिद्धानम्) यहाँ यह बताना आवश्यक है कि जैन धर्मावलम्बी इस नरेश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के बारे मे किसी भी साहित्यिक स्रोत से कुछ भी ज्ञात नहीं होता। यदि यह लेख नहीं प्राप्त होता तो इस प्रभावशाली सम्राट के विषय में हम अन्धकार में ही रहते। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति एवं यशोधर्मा के मन्दसौर अभिलेख का भी यही महत्व है। यदि ये दोनों अभिलेख नहीं प्राप्त होते तो समुद्रगुप्त की दिग्विजयी भूमिका केवल मुद्राओं के सहारे नहीं आंकी जा सकती थी। कालिदास के रघुवंश के आधार पर रघु के दिग्विजय को जो तुलना समुद्रगुप्त से की जाती है, उसका मूल आधार प्रयाग प्रशस्ति ही है। इसी प्रकार यदि मन्दसौर का अभिलेख नहीं मिलता तो हम यशोधर्मा के विषय में बिल्कुल अनजान रहते और यह नहीं जान पाते कि सदा शिव के चरणों में नत रहने वाले मिहिरकुल को किसने अपने पैरों में नत रहने के लिए बाध्य किया।